हमारा समय इतनी तेजी से बदल रहा है कि बदलाव की नस को पकड़ना आसान नहीं। फिर भी अगर आंख-कान खुले हों और घनघोर वर्तमान के आर पार देख पाने का हुनर हो तो अंदाजा तो लगाया ही जा सकता है कि हमारे समाज की चाल क्या है। परिवर्तन की जो पदचाप सुनाई पड़ती है, वह भविष्य की किस डगर पर ले जाएगी, यह कहना तो मुश्किल है। इस संबंध में अब तक आप प्रो. मदनदत्त, विवेक मोहन, अमर ठाकुर, डॉ. दिनेश शर्मा और डॉ. कैलाश आहलूवालिया के विचार पढ़ चुके हैं। इस बार परिवर्तन की पदचाप सुना रहे हैं दिल्ली से ***मोहिंदर कुमार।*** *1956 में कच्छ, गुजरात में जन्म, पालमपुर, हिमाचल में पले और दिल्ली में पढ़े मोहिंदर इंडियन ऑइल कंपनी में प्रबंधक हैं। लिखने-पढ़ने के साथ-साथ ये दो ब्लाग चलाते हैं : dilkadarpan.blogspot.com अपने लेखन का और मित्रों के साथ मिलकर इंटरनेट पत्रिका sahityashilpi। मोबाइल : 09899205557*

● समय के साथ हर एक को बदलना पड़ता है चाहे वह जड़ हो अथवा चेतन, किसी भी परिवर्तन की तार्किकता को जांचने के लिये समय की तुला ही सही तुला है। व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज, समाज से देश और देशों को मिला कर ही विश्व का निर्माण हुआ है। इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि निम्न स्तर पर हुआ कोई परिवर्तन विश्व स्तर पर हलचल मचा सकता है चाहे इसमें समय की कोई सीमा तय नहीं है।

● शिक्षा के साथ मानसिक स्तर बढ़ा है। साथ ही गांवों से शहरों की ओर एवं शहरों से विदेशों की ओर पलायन आरम्भ हुआ है। और यह स्वाभाविक ही है कि आप किसी को आसमान का सपना दिखा कर धरती पर कब तक बांधे रख सकते हैं। एक समय था जब गांव के तकरीबन हर परिवार में से एक बच्चा फौज में भरती होता था। आज वह समीकरण बदल गया है। सवाल सिर्फ रोटी का नहीं रह गया। यहीं से आरम्भ होता है संयुक्त परिवार का विघटन। भावनाप्रधान बन कर हम इसे एक विसंगति मान सकते हैं परन्तु जीवन भावनाओं से तो नहीं चलता। जीवन के ठोस धरातल पर भावनायें एक शीशे से अधिक कुछ नहीं जो आवश्यकताओं से टकरा कर चकनाचूर हो जाती हैं।

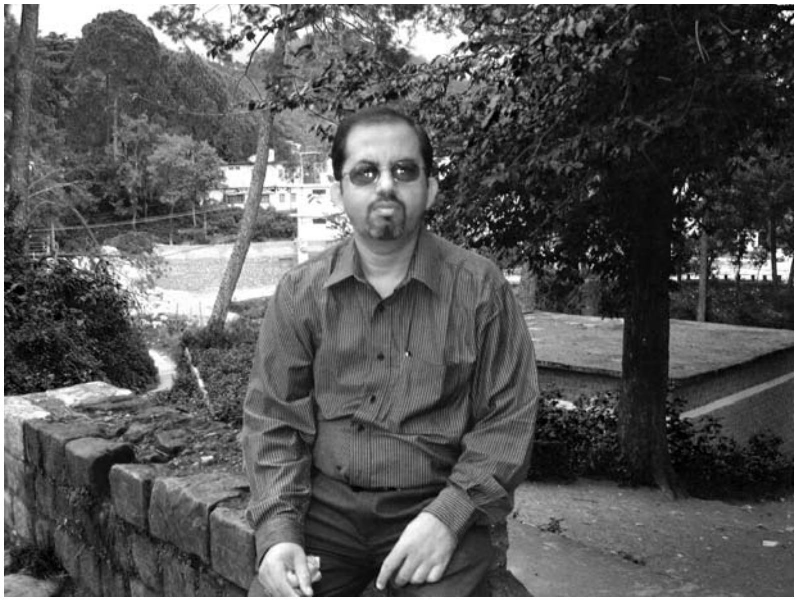

● टी.वी. पर एक प्रेरक प्रसंग सुना था कि धर्म या जाति से किसी व्यक्ति का संबंध केवल जन्म के कारण ही है। धर्म व जाति केवल एक संगठन भर है जिसमें समान विचारों को मानने वाले व्यक्ति हो सकते हैं। किसी भी मनुष्य की सोच धर्म व जाति से आगे जा सकती है। शायद इसी बात की पैठ ने नारी शिक्षा व अन्तर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहन दिया है। पर्दे से निकल कर नारी आज मर्दों के कंधे से कंधा मिला कर आगे बढ़ रही है व परिवार के आंतरिक व बाहरी दोनों कर्तव्यों का निर्वहन कर रही है।

● भूमंडलीकरण के चलते कोई भी सभ्यता दूसरी सभ्यताओं के प्रभाव से अछूती नहीं रही है। परिधानों में साड़ी ब्लाऊज और सलवार कमीज के साथ अगर स्कर्ट और जींस आ गई, हमारे विशिष्ट व्यंजनों में यदि पीजा, पास्ता, चाईनीज न्यूडल ने समावेश कर लिया तो आश्चर्य क्यूं? यही भाषा के बारे में कहा जा सकता है। एक तरफ हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे कान्वेंट स्कूल में पढ़ें दूसरी ओर हमें अंग्रेजी से चिढ़, यह कहां की समझदारी है। बच्चे यदि आज अपनी आंचलिक भाषाओं से विमुख होते जा रहे हैं तो निश्चय ही इसमें हमारी ही कोई कमजोरी है। आने वाली पीढ़ियों में संस्कारों का रोपण हमारी जिम्मेदारी है।

● विज्ञान के बल पर तकनीकी उपलब्धियों ने जहां हमारा जीवन सुखमय बना दिया है वहीं हमें काफी हद तक नाकारा भी कर दिया है। दूध के डिपो तक, बच्चे के स्कूल तक या सब्जी लेने जाना हो तो भी स्कूटर या कार के सहारे के बिना गुजारा नहीं होता। जीवन की भाग दौड़ में हम इतने व्यस्त हो गये हैं कि उस शरीर के लिये, जिससे हम चौबीस घंटे काम लेते हैं, हमारे पास चंद मिनट नहीं हैं। प्रकृति से दूर हो कर हमने कई व्याधियों को न्योता दिया है। पर्यावरण से छेड़ छाड़, जल थल व वायु प्रदूषण हमारी विकास योजनाओं के सामान्तर खड़े होकर हमें चिढ़ा रहे हैं। प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुन्ध विचारहीन दोहन हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए दुखद हो सकता है।

● वैसे अब कोई पप्पू नहीं रहा... मीडिया की महिमा है। यदि आप धार्मिक हैं और घर पर बैठे बैठे ही सत्संग का लाभ उठाना चाहते हैं तो केबल और डिश है न... और ज्यादा विश कीजिये ... टीवी के माध्यम से उपलब्ध धार्मिक चैनलों से जुड़िये, दुनिया भर की खबरें बार बार और लगातार सुनिये न्यूज चैनलों के माध्यम से चाहे आपको लगे की यह खबर कम और अफ़साना ज्यादा है। इससे आगे जाना है तो इन्टरनेट है ना। एक बटन के क्लिक पर उपलब्ध है हर जानकारी अपने स्वाद के अनुसार।

●कृषि, व्यावसायिक, औद्योगिकी व तकनीक के क्षेत्र में पिछले दस पन्द्रह सालों में जो परिवर्तन आये हैं उन्हें देख कर तो लगता है कि काश कुछ देर से जन्म लिया होता। अभी कुछ दिन पहले अखबार में खबर थी ''गंजों के सर पर फिर से लहलहायेगी बालों की फ़सल''। कोई जीन खोज ली गई है जो गंजेपन का कारण है। हो सकता है किसी दिन खबर आये कि बुढ़ापे और मौत की जिम्मेदार जीन खोज ली गई है। इसी आशा में मनवांछित परिवर्तन की पदचाप का इन्तजार है।